

हिंदी नाट्यक्रमों का विकास एवं उसमें आये बदलावों का अध्ययन

Mamatha Sharma*

M.A., Hindi, B.Ed., Net Qualified

सारांश - साहित्य में लोकमंगल की भावना सन्निहित है। यह लोककल्याण की भावना का झरना है जो मान की ज्ञान पिपासा को शांत कर उसे शीतलता प्रदान करता है। साहित्य ही मानव लोक तत्व के प्रति सचेत कर नवीन चेतना का सृजन करता है। साहित्य अपने समय और समाज का दस्तावेज होता है। साहित्य समाज की चेतना में सांस लेता है। वह समाज का परिधान है। जो जनता के जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आकर्षण और विकर्षण का ताना-बाना बुना जाता है तथा समाज में उसमें विशाल मानवीयता के दर्शन होते हैं। साहित्य मानव की अनुभूतियों, भावनाओं, कलाओं एवं संघर्ष की कथाओं का दस्तावेज है। साहित्य युग सापेक्ष होता है। उसके मूल-मानव जीवन के संघर्ष का परिवेश, वातावरण, परम्परा, इतिहास और आधुनिकता का समावेश होता है। मनुष्य एक संघर्षशील व चिन्तनशील प्राणी है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं जो मनुष्य के चिन्तन से अछूता रहा हो।

-----X-----

प्रस्तावना

मानव का संघर्ष एक निरन्तर चलनी वाली प्रक्रिया है। जो कि जन्म से मृत्यु तक चलायमान है। संघर्ष केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है। इस संसार का प्रत्येक प्राणी संघर्षशील है अपनी जीवन प्रक्रिया के प्रति। साहित्य में ही समाज के यथार्थ स्वरूप देखा जा सकता है। जैसे तो साहित्य में अनेक विधाएं हैं जिसमें समाज का वास्तविक प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। लेकिन 'नाटक' सब विधाओं में सर्वोत्तम विधा है। नाटक का समाज के भावनात्मक जुड़ाव अधिक है। क्योंकि नाटक के माध्यम से किसी भी कथ्य को अधिक स्पष्टरूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसलिए 'भारतमुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' नाटक पंचम वेद माना है जिसमअन्य सभी वेदों का समावेश है जो मानव मनस्पटल पर अमिट छाप छोड़ता है। जिसके कारण वह समाज के प्रति तथा समाज में घटित होने वाली समस्याओं के प्रति जागृत कर नव चेतना का सृजन करता है।

साहित्य ही समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करता है। मानव हृदय से, वैर, द्वेष, घृणा, असमानता, हिंसा, अनैतिक, छल-कपट, कुंठा, पीड़ा, अलगाव, घुटन और हर प्रकार नाकारात्मकता दूर कर प्रेम और शान्ति का संदेश देता है। विश्व स्तर पर अहिंसा, प्रेम और शांति का सन्देश साहित्य के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है। भारतीय संस्कृति एवं

साहित्य में तो 'वसुदैव कुटुम्बकम्' की भावना आदिकाल से चली आ रही है। न केवल मनुष्यों के प्रति सहानुभूति है, वरन-पशु पक्षियों, पेड़-पौधों, समस्त प्राणियों के प्रति करुणा भाव साहित्य का मूल भाव है। 21वीं सदी नाटककारों ने समाज के जिस रूप को देखा उसको उसी रूप में दर्शाया है। 21वीं सदी को नाटक समाज में विकृत हो मानवीय संवेदनाएं, बिखरते सामाजिक सम्बन्ध, विघटित हो रहे नैतिक मूल्य और तार-तार होती संस्कृति, भ्रष्टाचार तथा संयुक्त परिवारों का टूटना तथा नारी के प्रति जैसा समाज में व्याप्त है। नाटक वास्तव में अन्य साहित्यिक विधाओं मविशिष्ट और सर्वोत्तम है। नाटक के रसिक दर्शक होते हैं, शेष साहित्य के श्रोता। 21वीं सदी के नाटकों के माध्यम से सुधारवादी दृष्टि का प्रचार-प्रसार अधिक हुआ है। मानव के हृदय में नवीन चेतना का सृजन कर समाज को नवीनता और अखण्डता की ओर ले जाने का प्रयास किया है।

नाटक का अर्थ और उत्पत्ति

“नाटक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'नट', 'नाट्' और नट धातु से मानी जाती है। नाट्य की उत्पत्ति कब और कहां हुई इसके विषय में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। भारतीय परम्परा के अनुसार तो नाट्य वेद की सृष्टि ब्रह्मा ने की उसका पृथ्वी प्रचार भरतमुनि ने किया।

भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र के प्रारम्भ में लिखा है कि त्रेतायुग में देवता ब्रह्मा के पास गए और उनसे उन्हें मनोरंजन का कोई साधन प्रदान करने की विनती की तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस के तत्व लेकर पाँचवे वेद नाट्यवेद की रचना की। नाटक की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद दिखाई देता है। संस्कृत आचार्यों ने दृश्य-काव्य के रूपक कहा है। “रूपक ऐसे प्रदर्शन को कहेंगे जिसमें अभिनय करने वाला किसी के रूप, हावभाव वेश-भूषा, बोलचाल आदि का ऐसा अच्छा अनुसरण करे कि उसका वास्तविक व्यक्ति का भेद प्रत्यक्ष न हो सके।” “हिन्दी नाटक का उद्भव लोकनाट्य धारा और संस्कृत परम्परा के मिलन से राज दरबारों में हुआ, पर मन्दिरों में मूलतः जन भाषा के माध्यम से जैन देवालियों में और संस्कृत का पुट देते हुए लोक भाषा के द्वारा वैष्णव रास लीलाओं से हुआ है।”

हिंदी नाट्य कर्मों में आये बदलाव

साहित्य जीवन का दर्पण है जीवन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष विधि से साहित्य में छनकर आता है और अपने विषय में पाठकों के मन मनयी-नयी सम्भावनाएं जगता है। हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक दृश्य-श्रव्य विद्या होने के कारण दर्शक को विशेष रूप से आकर्षित है। 21वीं सदी में आए बदलाव के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक और जीवन मूल्यों में काफी परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का प्रभाव साहित्य पर देखा जा सकता है। नाटककार ने जो समाज मदेखा, अनुभव किया वही साहित्य में दिया है। समकालीन नाटककारों ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को आधार बनाकर नाट्य रचना की है और नाट्य रचना को सजीवता प्रदान की है रंगमंच ने।

21वीं शताब्दी के नाटकों में सजीवता लाने के लिए नाटक के तत्वाधान और रंगमंचीय प्रस्तुति की ओर विशेष ध्यान दिया है। जिसके नाटकों के प्रति जनमानस का दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। अभिनयांगाका गम्भीर अध्ययन करने के उपरान्त रंगमंच के प्रति एक सम्पूर्ण और खुली दृष्टि रखकर हिन्दी नाटक और रंगमंच के लेखन अभिनय कला, निर्देशन मंच-परिकल्पना, प्रकाश व्यवस्था आदि सभी संसाधनों का प्रयोग के साथ उनमें नवीन अत्याधुनिक उपकरणों का प्रयोग तथा नवीन प्रयोगशील दृष्टि अपनाकर हिन्दी नाट्य परम्परा को सशक्त और पोषकता प्रदान करने का प्रयास किया है। रंगमंचीय सफलता की इससे बड़ी उपलब्धियां क्या होगी कि आज अन्य भाषाओं के नाटक भी राष्ट्रीय स्तर पर अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए हिन्दी रंगमंच का आश्रय लेने को बाध्य हो रहे हैं।

21वीं शताब्दी में महत्त्वपूर्ण नाटकों को लिया गया है। इनमें अधिकतर नाटक रंगमंच पर खेले जा चुके हैं। 21वीं सदी का नाटककार मानवीय संवेदना के बहुविध रूपों को रंगमंचीय दृष्टि से पचाकर शिल्प दृष्टि से परम्परित और नवीन नाट्य शैलियों का अद्भुत सम्मिश्रण कर रंगमंच को नयी दिशा दे रहा है। जीवन के एकान्त क्षणों में जब मानव जीवन में फैले हुए परम सत्य का दर्शन करने के लिये अपनी आकुल भावना का अभिसार करता है और आराधना की विभिन्न भूमिकाओं में आत्मदर्शन करता हुआ जब वह विश्व दृश्य बन जाता है। तब उसको कहा जाता है ‘कलाकार’। ये कलाकार अतीत के चित्रों को अपनी भावनाओं की तूलिका से चित्रित करता हुआ अपने भावों, विचारों और अनुरागों के द्वारा मानवता की सजीव प्रतिमा स्थापित करना चाहता है। वह अपने व्यापार जगत का समस्त हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, हास-विलास, सुख-दुःख, अभाव-पूर्णता आदि को लेकर निर्माण कार्य में व्यस्त रहता है। उसकी चिन्तन धारा परम से लेकर अवम तक और अवम से लेकर परम तक निरन्तर प्रवाहित रहती है। इसीलिये उसके स्वप्नों का संसार बड़ा ही सुखद एवं मनोरम होता है। कलाकार की समस्त कृति के मूल में उसकी चेतना और उसकी अनुभूति ही प्रधान होती है। समस्त शास्त्रों एवं कलाओं से युक्त नाटक की रचना इसी चेतना और अनुभूति का परिणाम है।

हिंदी नाट्य कर्मों का विकास

21वीं सदी वैज्ञानिक सदी है जो प्रगति और विकास के दौर मजहां रंगमंचीय नाटकों के प्रदर्शन के विभिन्न आयाम प्रस्तुत किये हैं। वही नवीन आविष्कारों ने नाटकों की मूलभूत धारणा में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिए हैं। पात्रों के सूचक परिधान, अलंकार भावभंगिमा आदि का प्रकटिकरण रंगमंच पर अच्छी प्रकार से सम्भव हो पाया है। वैज्ञानिक और तकनीकी ढंग से विकसित एवं निर्मित आधुनिक रंगमंच पर भी दृश्यों की बिम्बात्मकता उभारी जा सकती है। किन्तु आणुविक विस्फोटक आधुनिक युद्ध, समुद्री जहाज, आग लगना, वायुयान अथवा रेल दुर्घटना आदि दृश्यों को इनके वास्तविक रूप में रंगमंच पर नहीं दिखाया जा सकता है। ऐसे दृश्य तो केवल दूरदर्शन पर दिखाया जा सकते हैं। इसको ओर अधिक नैमिचन्द्र जैन जी ने अपनी पुस्तक ‘रंग दर्शन’ मव्यक्त किया है। जिस प्रकार रंगमंच को जीवित और सक्रिय रखने के लिए नाटक की निरन्तर रचना होती है उसी प्रकार रंगमंच सजीव होने से समर्थवान लेखक नाटक को अपनी अनुभूति के व्यापक और विस्तृत सम्प्रेषण का माध्यम पाता है और सहज ही उसका उपयोग करने को

उन्मुख होती है। रंगमंच सक्रिय होने से लेखक का नाट्यात्मक अनुभूति से निरन्तर साक्षात्कार होता है। जिससे नाटककार रूप में सृजनात्मक व्यक्तित्व के निर्माण और विकास में सहायता मिलती है। आधुनिक युग के उत्तरार्ध में यान्त्रिकी क्रान्ति ने मनुष्य के समक्ष विकास के बहुआयामी व्यवस्था स्थापित की है जिससे समाज में सूचना क्रान्ति की मशाल जल उठी टेलीविजन, टेलीफोन, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया ने समाज मनवीन दिशा प्रदान कर दी और सबसे अधिक कम्प्यूटर, इंटरनेट जैसे उपकरणों ने माना मानव को पंख ही लगा दिए हो जिसके आधार पर वह सूचना तन्त्र का सर्वसर्वा बनने का संघर्ष करे लगा है। आज सम्पूर्ण विश्व के दृश्यों, घटनाओं को घर बैठकर भी उपलब्ध किया जा सकता है जहां इन सब नवीन एवं अत्याधुनिक उपकरणों ने मानव जीवन को सरल बना दिया है। वही प्रेम, भाई-चारे अखण्डता के सामाजिक मूल्य अर्थहीन हो गये हैं। प्रथम अध्याय में इन सब नवीन आविष्कार एवं उनके हमारे समाज और व्यक्तिगत जीवन में होने वाले प्रभाव को अभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रयास किया है। 21वीं सदी ने मानव को अधिक सुविधा भोगी बना दिया। इन सब सुविधाओं का लाभ केवल उच्चवर्ग अथवा धन सम्पन्न लोग ही उठा पाते हैं। वर्तमान समाज मनुष्य में संबंधो के प्रति अलगाव, घुटन, कुंठा, ऊब, अन्तः बाह्य द्वन्द्व तथा कई प्रकार की नकारात्मकता उत्पन्न हुई है। यह केवल सदी के बदलते परिवेश का प्रभाव है जो मनुष्य को मनुष्य से दूर किये जा रहा है। आज एक परिवार लोगों में आपसी प्रेम, स्नेह दिखाई नहीं देता।

जिसके कारण संयुक्त परिवार विघटन के कगार पर आ खड़े हुए हैं। 21वीं सदी के नाटककारों ने तीव्र गति से बदलते परिवेश को अभिव्यक्ति प्रदान की है तथा बदलते परिवेश में मानव का बदलते आचार-व्यवहार को नवीन परिस्थितियों के रूप में अभिव्यजित किया है। 21वीं सदी में नाटक के विकास के साथ बदलते कथानकों अर्थात् कथा वस्तु में समाज के यथार्थ स्वरूप को दर्शाने का प्रयास किया गया है। वर्तमान समाज के यथार्थ घटनाओं, चित्रों, अनुभूतियों को ही नाटककार ने कथावस्तु के रूप में प्रयोग किया। इसमें नाटक अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं महत्व को बताया गया है। स्वतंत्रता से पूर्व नाटकों की कथावस्तु, कल्पना, ऐतिहासिकता पर आधारित नाटक लिखे जिनका जन-जीवन के साथ जुड़ाव कम ही देखा गया परन्तु समय के साथ साहित्य में भी काफी परिवर्तन हुए। स्वतंत्रता के बाद के नाटकों को जन-जीवन से जोड़कर लिखा गया है।

21वीं सदी के नाटककारों ने नाट्य साहित्य को जन-जीवन के हर पहलू से जोड़ने का प्रयास किया है। जन-जीवन की विपरीत परिस्थितियोंके विरोध में संघर्ष का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया

है। इस अध्याय मसंघर्ष का अर्थ परिभाषा संघर्ष के स्वरूप के साथ दर्शाया गया है। जो हृदयों पर अमिट छाप छोड़ देता है। समाज में 21वीं सदी में समाज में धूमिल होती राजनीति, गिरते मूल्यों, टूटते रिश्तों और बूठे वादे ही रह जाते हैं। वर्तमान में शिक्षण संस्थान भी राजनीति का केन्द्र बन गये हैं। आज हमारी राजनीति असंजमस की राजनीति बन गई है। जनता का शासकातथा राजनेताओं पर से विश्वास उठ चुका है। देश में जनहित शासन तन्त्र के स्थान पर अराजकता तथा स्वार्थी की राजनीति ही रह गई है। हर तरफ हिंसात्मक वातावरण बना हुआ है।

निष्कर्ष

नाटक ही एक मात्र ऐसी विधा है जिसमें कम से कम शब्दों, अधिक से अधिक बात कही जा सकती है। यह विधा दृश्य-श्रव्य होने के कारण अधिक प्रभावशाली है। स्वतन्त्र्योत्तर नाटककारों ने नाटक के सभी तत्वों के साथ नये प्रयोग किये हैं। इस प्रयोग में वस्तु, पात्र, संवाद, अभिनय और भाषा शैली आदि सभी अधिक स्वाभाविक और भावनात्मक जुड़ाव के साथ प्रस्तुत करने का सफल प्रयोग किया है। 21वीं सदी के नाटक जहां सामाजिक समस्याओं का पर्दापर्ण किया वही साहित्य को जन-जीवन से जोड़ने का कार्य किया है। अभिनय तत्व रंगमंच की आत्मा है। जिसके कारण अत्याधिक आधुनिक नाटकों में तकनीकी प्रयोग ने भी नाटक को अधिक प्रभावपूर्ण बना दिया है। जो नाटककार अपने नाटकों के रूप गठन में रंगमंच की अपेक्षा और समस्त तत्वों का कलात्मक प्रयोग करते हैं वे नाटक अत्याधिक उत्कृष्ट होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अशोक लाल एक मामूली आदमी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
2. उषा गांगुली रूदाली, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
3. किशोर कुमार सिन्हा धारा एक सौ चवालीस, वाणी प्रकाशन, 21ए, दरियागंज, नई दिल्ली, 2009
4. कृष्ण नन्दन सिन्हा अपहरण, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
5. नादिरा जहीर बब्बर सुमन और सना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

6. नरेन्द्र पाल भ्रष्टाचार, वाणी प्रकाशन, 21ए दरियांगंज, नई दिल्ली, 2014
7. नरेन्द्र मोहन हद हो गई, यारो, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
8. मधु धवन आज की पुकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
9. मीराकान्त उत्तर-प्रश्न, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
10. हृषीकेश सुलभ अग्नितारिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, 7/31 अंसारी रोड़, दरियांगंज मार्ग, नई दिल्ली, 2011

Corresponding Author

Mamatha Sharma*

M.A., Hindi, B.Ed., Net Qualified